पाठ 22

एचआईवी/एड्स : जाँच एवं परामर्श

एचआईवी/एड्स आज समस्त विश्व के समक्ष एक ज्वलन्त समस्या बन चुकी है। कई परिवार इसके प्रकोप से पीड़ित हैं। इसके विषय में चर्चा करना और बचाव करना अति आवश्यक है।

विश्व के अनेक भागों की तरह एचआईवी–एड्स भारत में सबसे अधिक गम्भीर जनस्वास्थ्य समस्या बन गई है। भारत में एड्स का पहला रोगी 1986 में पाया गया था और अब सभी राज्यों और संघ शासित राज्य क्षेत्रों में एचआईवी संक्रमण की सूचना मिल रही है।

रोग के आँकड़ों से पता चलता है कि युवाओं में यह संक्रमण अधिक पाया जाता है। यौन संचारित संक्रमण और एचआईवी 15–24 वर्ष की आयु के युवाओं में अधिक है और अनुमान है कि एचआईवी–एड्स के आधे संक्रमण 25 वर्ष से कम आयु के लोगों में है। एचआईवी संक्रमण किशोरों और युवाओं में विशेषकर 15–24 आयु वर्ग की युवा महिलाओं में अधिक है। हमारे देश में ऐसी बहुत सी बाधाएँ हैं जिससे युवाओं को अपने यौन एवं प्रजनन स्वास्थ्य को सुरक्षित रखना कठिन होता है। सूचना, सेवाओं और संसाधनों तक पहुँच कम होने के कारण यह खतरा ज्यादा होता है। युवाओं में प्रायः समुचित यौन शिक्षा और जीवन कौशल प्रशिक्षण तथा सामाजिक समर्थन की कमी है। उन्हें यौन सम्बन्धों और यौन क्रियाओं के बारे में अधूरी जानकारी अपने मित्रों और अन्य स्रोतों से प्राप्त होती है।

एचआईवी–एड्स का कोई इलाज नहीं है इसलिए एचआईवी संक्रमण को रोकने का एकमात्र उपाय बचाव ही है। कोई भी व्यक्ति ऐसा व्यवहार न करे जिसमें खतरे की सम्भावना हो। इस रोग को नियंत्रित करने सम्बंधी कार्य नीतियों में सेवाओं की ऐसी व्यवस्था तैयार करना है जिसमें परामर्श, क्लिनिकल परिचर्या और सामुदायिक और सामाजिक समर्थन शामिल हो।

एचआईवी क्या है ? (Human Immuno Deficiency Virus)

एचआईवी का पूरा नाम ह्यूमन इम्यूनो डेफिशिएन्सी वायरस (Human Immuno Deficiency Virus) है। जैसा कि नाम से प्रतीत होता है, यह एक प्रकार का विषाणु (वायरस) है। शरीर में प्रवेश करने के बाद यह व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक प्रणाली को धीरे–धीरे कमजोर करता है।

एचआईवी पॉजिटिव (HIV Positive)

एचआईवी संक्रमित व्यक्ति को ही एचआईवी पॉजिटिव (HIV Positive) कहते हैं। एचआईवी संक्रमित व्यक्ति कई वर्षों तक स्वस्थ दिखाई देता है। उसे महसूस ही नहीं होता कि वह एचआईवी पॉजिटिव है, लेकिन ऐसा व्यक्ति इस खतरनाक वायरस को दूसरे व्यक्तियों तक पहुँचाने में सक्षम होता है।

एड्स (AIDS) क्या है ?

A से Acquired	➔	अर्जित : आनुवांशिक रूप से नहीं, बल्कि किसी व्यक्ति से प्राप्त।
ID से Immunodeficiency	➔	शरीर की रोग प्रतिरक्षा का ह्रास, बाह्य रोगों से सामना करने के लिए शरीर की मुख्य प्रतिरक्षा प्रणाली में कमी आना।
S से Syndrome	➔	रोगों का समूह – जब व्यक्ति को एक या एक से अधिक रोग हों।

एचआईवी संक्रमण की अन्तिम अवस्था को एड्स कहते है। इस अवस्था में रोग के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। एड्स एक संक्रामक रोग है यानि यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। एड्स का पूरा नाम है 'एक्वायर्ड इम्यूनो डेफिशिएन्सी सिण्ड्रोम' (Acquired Immunodeficiency Syndrome) यानि रोग प्रतिरोधक क्षमता का अभाव उत्पन्न करने वाली अवस्था।

एचआईवी कैसे फैलता है ?

एचआईवी मनुष्य के रक्त, वीर्य या योनि स्राव में पाया जाता है। इसलिए एचआईवी संक्रमित व्यक्ति के रक्त या वीर्य अथवा योनि स्राव के सम्पर्क में आने के बाद ही दूसरा व्यक्ति इसके चपेट में आता है।

यह विषाणु निम्नलिखित माध्यम से शरीर में प्रवेश कर सकता है –

- संक्रमित व्यक्ति के साथ असुरक्षित यौन सम्बन्ध से।
- संक्रमित रक्त चढ़ाने से।
- संक्रमित सुई का उपयोग करने से।
- संक्रमित माँ से शिशु को।

चित्र 22.1

एचआईवी/एड्स कैसे नहीं फैलता

- भीड़ में जाने से
- हाथ मिलाने से या गले मिलने से
- साथ खाना खाने से
- मक्खी मच्छर के काटने से
- तरण–ताल में नहाने से
- एक ही जगह काम करने से
- खांसने व छींकने से
- सार्वजनिक गुसलखाने का प्रयोग करने से
- एक साथ खेलने से

हाथ मिलाने अथवा गले मिलने से
प्यार फैलता है,
एड्स नहीं।

एड्स के लक्षण

- शरीर के वजन में चार सप्ताह में 10 प्रतिशत से अधिक कमी।
- एक महीने से अधिक समय तक दस्त।
- एक महीने से अधिक समय तक बुखार।
- एक महीने से लगातार खाँसी।
- गले या बगल या जाँघों में गिल्टियाँ।
- हर्पीज रोग का बार–बार होना।

- त्वचा पर दाने व खुजली।
- पूरे शरीर पर पीड़ा रहित दाने।
- मुँह और गले में छाले।
- लगातार थकान।
- रात्रि को अधिक पसीना।

यह जरूरी नहीं कि उक्त में से कोई एक या अधिक लक्षण वाला व्यक्ति एड्स का मरीज ही हो। इसलिए एड्स का पता लगाने का एकमात्र तरीका है, रक्त परीक्षण।

एड्स परीक्षण

एड्स पता करने के लिए सबसे पहले जो परीक्षण होता है, इसे एलिसा टैस्ट (Elisa Test) कहते हैं। जाँच पॉजिटिव (संक्रमण सिद्ध) आने पर इसकी पुष्टि के लिए वैस्टर्न ब्लॉट परीक्षण (Western Blot Test) होता है। इसमें भी जाँच यदि पॉजिटिव आती है तो व्यक्ति को एचआईवी. पॉजिटिव या एचआईवी ग्रसित अथवा एड्स पीड़ित माना जाता है।

व्यक्ति के संक्रमित होने और उसके रक्त परीक्षण के पॉजिटिव आने के बीच की अवस्था को विण्डो पीरियड (Window Period) कहते हैं। यह अवस्था 12 से 14 सप्ताह होती है। दूसरे शब्दों में कहें, विण्डो पीरियड के दौरान व्यक्ति एचआईवी पीड़ित तो होता है, लेकिन रक्त परीक्षण में यह बीमारी पकड़ में नहीं आती। ऐसा व्यक्ति बाहरी तौर पर एकदम स्वस्थ दिखाई देता है, लेकिन वह एचआईवी संक्रमण फैलाने में सक्षम होता है।

एड्स परीक्षण कहाँ कराएँ ?

- प्रत्येक सरकारी जिला चिकित्सालय के वी.सी.टी.सी. (वालॅण्टरी काउन्सलिंग टैस्टिंग सेन्टर) में एचआईवी की मुफ्त जाँच की सुविधा होती है।
- बड़े निजी चिकित्सालयों में भी यह परीक्षण होता है।
- कुछ गैर सरकारी संस्थाएँ भी एचआईवी जाँच करती है।

एड्स का इलाज

दुनिया भर में वैज्ञानिक विभिन्न प्रयोगों में जुटे हैं, फिर भी एड्स का इलाज अभी तक ढूँढ़ा नहीं जा सका है। इसकी रोकथाम के लिए न तो कोई टीका बना है, न ही कोई प्रभावी दवा। वैसे एचआईवी पीड़ितों के लिए एंटी रेक्ट्रोवायरल थेरेपी (ART) दी जाती है इसमें रोगी को विशेष दवाएँ दी जाती है जिससे एड्स की तीव्रता कम होती है। एचआईवी पीड़ित गर्भवती स्त्री को ये दवाएँ दी जाती हैं ताकि उसका गर्भस्थ शिशु इस वायरस से सुरक्षित रह सके।

एड्स से बचाव

एड्स घातक व लाइलाज बीमारी है। इसका कोई स्थायी इलाज नहीं है। इसलिए सावधानी ही इससे बचाव का एकमात्र उपाय है। एड्स से बचाव के लिए –

- एक से अधिक व्यक्तियों से यौन सम्बन्ध न रखें।
- अनजान या पेशेवर व्यक्ति (वेश्या आदि) से यौन सम्बन्ध न रखें।
- जीवन साथी के प्रति वफादार रहें।
- निरोध (कंडोम) का इस्तेमाल करें।
- सदैव कीटाणु रहित सुई, सिरिंज या अन्य चिकित्सा औजारों का इस्तेमाल करें।
- यदि रक्त चढ़ाना जरूरी हो तो एचआईवी रहित व्यक्ति का रक्त लें। हर हालत में जाँच किया हुआ रक्त ही लें।
- गर्भावस्था में एचआईवी की जाँच करवाने पर यदि जाँच पॉजिटिव आती है तो गर्भस्थ शिशु में संक्रमण रोकने की दवाईयाँ लें।

एड्स रोगी एवं हमारा कर्तव्य

एड्स रोगी अपने को रोगग्रस्त जानकर बहुत दुखी होता है। उसके जीवन में अँधेरा छाने लगता है। वह अपने को असहाय, कमजोर एवं हेय समझता है। किसी के सामने आने अथवा बात करने से जी चुराता है। उसके लिए संसार शून्य हो जाता है। वह जीते जी मृत्यु को धारण कर लेता है।

इस समय उसे आवश्यकता होती है सच्चे मित्र अथवा साथी की जो उसके साथ रहकर प्यार दे सके। उसे सामान्य जीवन का भरोसा दिलाकर उसके एकाकी जीवन को सामान्य कर सके। अतः समाज के प्रत्येक सदस्य भाई, बहन, मित्र, माता–पिता एवं अन्य सदस्यों का यह कर्तव्य है, कि वे सभी रोगी को अपने साथ रखकर सामान्य दैनिक क्रियाओं में सम्मिलित करें। साथ–साथ खाना खाएँ, उसके साथ उठें–बैठें, बात करें,। उसे दया का पात्र न बनाएँ इससे उसका धैर्य एवं साहस बढ़ेगा, वह सामान्य रह कर रोग का सामना कर सकेगा। यह भी जरूरी है कि रोगी नियमित डॉक्टरी परामर्श भी लेता रहे।

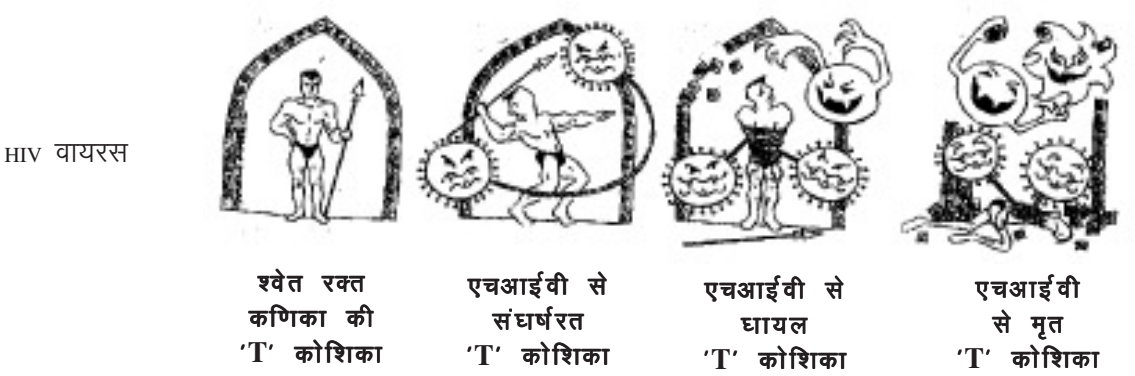

चित्र 22.2

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- एचआईवी–एड्स एक भयानक रोग है। यह असुरक्षित यौन सम्पर्क अथवा संक्रमित व्यक्ति का रक्त चढ़ाने या संक्रमित सुई अथवा चिकित्सा औजारों के प्रयोग से फैलता है।
- एड्स के लक्षण प्रायः वर्षों तक नजर नहीं आते। यह व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता को धीरे–धीरे कम कर देता है।
- एड्स का अभी तक कोई उपचार नहीं है। इससे बचाव ही एकमात्र उपाय है। एड्स पीड़ित व्यक्ति को दूसरों के प्यार की आवश्यकता है, उपेक्षा की नहीं।

जानें, समझें और करें

1. आपके मित्र जो विद्यालय में नहीं आ पाते हैं, उनको एड्स से बचने के लिए क्या–क्या जानकारी देंगे ?

.....

.....

2. यदि आपको पता लगे कि आपके आस–पास कोई एड्स रोगी है तो आप अपने कर्तव्य का निर्वहन किस प्रकार करेंगे ?

.....

.....

3. नीचे दिए गए कथनों के आगे सही जवाब वाले खाने में सही का (✓) निशान लगाइए –

वक्तव्य	सही	गलत	पता नहीं
1. यौन संचारित रोग ठीक हो सकते हैं, लेकिन एड्स का कोई इलाज नहीं है।			
2. एचआईवी पीड़ित व्यक्ति को बाहर से देखने से ही बीमारी का पता चल जाता है।			
3. एचआईवी संक्रमण वीर्य, योनि स्राव व खून के माध्यम से ही फैलता है।			
4. एचआईवी संक्रमित व्यक्ति से असुरक्षित (बिना निरोध के) यौन सम्बन्ध स्थापित करने पर दूसरा व्यक्ति भी एचआईवी की चपेट में आ सकता है।			
5. एचआईवी संक्रमित व्यक्ति को छूने से व गले लगाने से एड्स फैलता है।			
6. किसी को खून देने से एड्स फैलता है।			
7. एक से अधिक व्यक्तियों के साथ यौन सम्बन्ध रखने से एचआईवी संक्रमण हो सकता है।			
8. एचआईवी या एड्स संक्रमण से बचने का कोई टीका/दवाई नहीं है।			
9. एचआईवी से संक्रमित व्यक्ति को स्कूल में नहीं पढ़ना चाहिए।			
10. यौन सम्बन्ध के समय निरोध प्रयोग करने से एचआईवी फैलता है।			
11. एचआईवी संक्रमित महिला द्वारा स्तनपान कराने से बच्चा एचआईवी संक्रमित हो सकता है।			

एड्स की रोकथाम, हम सबका है काम।